Raga of the Month September 2021 Poorvianga Ragas पूर्वी अंग के राग

पूर्वी यह एक सायंकालीन संधिप्रकाश राग है। उसमें रिषभ, धैवत कोमल, मध्यम तीव्र और अन्य स्वर शुद्ध है। थाट वर्गीकरण पद्धति के अनुसार पूर्वी यह एक थाट माना गया है। कर्नाटक पद्धति में इन्हीं स्वरों का मेल कर्ता कामवर्धिनी (नंबर ५१)सर्वमान्य है। रागांग पद्धति में पूर्वी एक महत्वपूर्ण रागांग राग है। पूर्वी थाटके रागों में श्री अंग और उसका उपांग गौरी अंग शामिल है। राग पूर्वी में शुद्ध मध्यम का रागांतर्गत विवादी के रूप में दो गंधारोंके बीच, अल्प प्रमाणमें प्रयोग होता है। राग पूर्वी के विशेष स्वर संगति इस प्रकार है-

वादी गंधार, संवादी निषाद, न्यास स्वर सा, ग, प, नी; राग पूर्वांग प्रधान है; रे, ध सहायक स्वर है; उनके ऊपर ठहराव नहीं होता। पूर्वी रागांग वाचक विशेष स्वर प्रयोग

नि, सा रे ग, गमं ग, गरे ग, गरे ग-रे सा, सानि , मं ग गरे ग, ग रे ग मं प,

प ध मं प, ध मं ग ,मं ध नि, सां, नि रें नि ध मं ग

स्वरसंगती ग - प और प – ग ; **राग पूर्वी का विशेष प्रयोग** प, मं ग म रेग

पूर्वी अंग के प्रमुख राग है पूर्वी, पूरियाधनाश्री, जैताश्री, परज, रेवा।

श्री अंग के रागों में श्री, बसंत, त्रिवेणी, मालवी, टंकेश्री ,गौरी, और श्री अंग का रेवा ये राग आते हैं।

स्वर प्रयोग के हिसाबसे पूर्वी थाट के रागोंका अलग तरीकेसे **वर्गीकरण** किया जा सकता है; जैसे

जिनमे **केवल तीव्र मध्यम** का प्रयोग होता है- पूरियाधनाश्री, श्री, जैताश्री , मालवी , टंकेश्री,

तीव्र मध्यम की गौरी;

जिनमे **दोनों मध्यमोंका** प्रयोग होता है- पूर्वी, बसंत, परज, दो मध्यम वाली गौरी

जिनमे **मध्यम वर्जित** होता है- त्रिवेणी, रेवा

राग पूर्वी का पूरियाधनाश्री यह समप्राकृतिक राग है। पूर्वी के वादी संवादी,ग और नि है, पूरिया धनाश्री में प और रे वादी संवादी हैं । निम्नलिखित स्वर संगतियाँ पूरियाधनाश्रीमें महत्वपूर्ण मानी जाती है ।

सा , रेनि, ग रे रेग, रेमं ग -रे ग, रेग रे, नि रे सा, मं रे ग प, मं ध प,

निध नि रे ग, पमं ध पग प, पग मं, मंरे मं ग, पध मं ग, ध प, रें नि ध प, मं रे ग, रे सा.

पूर्वी अंगका रेवा एक अप्रचलित राग है। मध्यम और निषाद वर्ज्य होनेसे रेवा और भैरव थाट का बिभास सम स्वरी राग बनते हैं। इन दो रागोंके गायनमे क्या विशेषताएं हैं यह पंडित रामाश्रेय झा जीने ऑडियो में स्पष्ट किया है।

आज के ऑडियो में हम **पंडित गिंडेजी** से राग पूर्वी का विवरण, राग पूर्वी की एक वैशिष्ट्य पूर्ण बंदिश जिसमें शुद्ध मध्यम का प्रयोग नहीं है वह सुनेंगे उसके बाद में राग पूरियाधनाश्रीकी विशेषताएं और अंतमें **पंडित रामाश्रेय झा** जी से पूर्वी अंगके रेवा राग का संक्षिप्त परिचय और एक बंदिश सुनेंगे।

आभार- "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , श्री राजन पर्रीकर , श्री अजय गिंडे.

०१ -० ९ -२०२१

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx